शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

आग्रह का विषय है भाषा की शुद्धता

डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

विज्ञान और तकनीक के युग में भाषा की घोर उपेक्षा चिंताजनक है। आज भाषाओं के सामने अपने अस्तित्व को बचाने का संकट उपस्थित हो गया है। उस पर से शासन द्वारा भाषा को लेकर लागू की गयी शिक्षा नीति ने दोहरी मार की है। भाषा की शुद्धता के अभाव में देश में विशुद्ध चिंतन के अभाव को महसूस किया जा सकता है। तकनीक ने भाषा की अशुद्धि के लिए मुख्य कारण मुख सुख के साथसाथ लेखन में भी अपनी घुसपैठ बना ली है। संस्कृत में सूत्र रूप में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की सुदीर्घ परंपरा रही है। कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक अर्थ भरने को कला का स्थान प्राप्त हुआ है परंतु आज युवा पीढ़ी में भाषा में लघुता ने विकृत रूप धारण कर लिया है। उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता पर प्रश्नचिह्न लग गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि विद्यार्थी अपनी भाषा से बहुत दूर जा चुका है। एक सामान्य-सा आवेदन पत्र अपनी भाषा में लिखने में युवा अपने आपको असमर्थ पाता है। यदि राष्ट्रभाषा हिन्दी की बात करें तो इसकी स्थिति उन प्रदेशों में अधिक नाजुक है, जहां यह मातृभाषा के रूप में बोली जाती है। दक्षिण भारत में चूंकि हिन्दी भाषा सीखी और सिखायी जाती है, इसलिए वहां पर स्थिति कमोबेश बेहतर है। आज से कुछ वर्ष पहले तक हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं, समाचार पत्रों को हिन्दी भाषा सुधारने का माध्यम समझा जाता था। उनकी लोकप्रियता सिर्फ इसलिए नहीं थी कि उनमें स्तरीय सामग्री प्रकाशित होती थी, बल्कि पाठक उससे अपनी हिन्दी भाषा में श्रीवृद्धि कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते थे। पचास-पचहत्तर वर्ष से प्रकाशित होने वाली हिन्दी पत्रिकाएं भी हिन्दी भाषा की शुद्धता का दावा नहीं कर सकतीं। एक जमाना वह था जब एक-एक शब्द और एक-एक वाक्य पर मेहनत की जाती थी। नये शब्द गढ़े जाते थे और उन्हें चलन में लाने के लिए जतन किए जाते थे। आज वह सब कुछ लुप्त हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि जब छापाखाने में तकनीक ने इतना विस्तार नहीं पाया था, तब यदि शुद्धता का आग्रह नहीं होता तो हिन्दी भाषा दो कदम भी नहीं चल पाती। आज भाषा को लेकर समाज और राष्ट्र में 'गूंगापन' बढ़ गया है। यह तथ्य सर्वविदित है कि शब्द के गिरने से देश नीचे गिर जाता है और शब्द के ऊंचा चढ़ने से देश भी ऊंचा चढ़ता है। भारत की आजादी में शब्दब्रह्म की साधना ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। ऐसे अनेक नये शब्दों को गढ़ा जिससे भारत की दुनियाभर में प्रतिष्ठा बढ़ी। उन शब्दों पर देश के लाखों लोगों ने भरोसा किया, क्योंकि उन्होंने केवल शब्दों का उच्चारण ही नहीं किया बल्कि अपना आचरण को उन शब्दों के अनुरूप ढाला। शब्द को शक्ति आचरण से मिलती है। आज हरेक शब्द के पीछे व्यावसायिकता का भाव निहित है। शासन-प्रशासन के अनेक क्षेत्रों में हिन्दी को आग्रहपूर्वक शामिल किया जा रहा है, परंतु समाज में हिन्दी की स्थिति दयनीय होती जा रही है। सत्ता का आश्रय पाकर भाषाओं के उत्थान और पतन को भारत ने नजदीक से देखा है। अनेक भाषाएं तो विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन तक सीमित हो गयी हैं। हिन्दी भाषा को प्रतिष्ठित करने के लिए पूरे देश में निःशुल्क हिन्दी शिक्षण केंद्रों का जाल फैलाने की आवश्यकता है, जिसमें कोई भी जाकर हिन्दी भाषा सीख सकता है। **भाषा की शुद्धता, आग्रह का विषय है**, इसे 'चलता है' कहकर अधिक समय तक टाला नहीं जा सकता।